कक्षा-10+2 (हिंदी)

तैयार कर्ता व प्रस्तुतकर्ता

'तत्सत' कहानी

डॉ.सुनील बहल

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

क) लगभग 60 शब्दों में उत्तर दें :-

प्रश्न-1 पशु और पेड़-पौधे वन के नाम से भयातुर क्यों होने लगे थे?

उत्तर : एक दिन घने जंगल में दो शिकारी आये। वे आपस में बातें कर रहे थे कि यह कितना भयानक और घना वन है।जंगल के पशुओं और पेड़-पौधों ने उनकी बातें सुनीं। वे हैरान थे कि उन्होंने कभी भी वन नाम प्राणी को नहीं देखा। उन्हें लगा कि वन सचमुच कोई भयानक चीज़ है। वे यह सोचकर के भयातुर हो गये थे।

प्रश्न-2 शिकारी प्रमुख द्वारा अपने साथियों की सलाह न मानने का क्या कारण था?

उत्तर : एक दिन जब दोबारा शिकारी जंगल में आये तो जंगल के पेड़-पौधों और वनचरों ने उनसे वन के बारे में जानना चाहा।एक शिकारी ने कहा कि हम सब जहाँ है वहीं तो जंगल है किन्तु वे शिकारी की बात से संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने कहा कि सच सच बताओ, नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं। शिकारी प्रमुख के साथी ने कहा कि तुम कह दो कि वन कुछ नहीं होता। किन्तु प्रमुख शिकारी ने निडर होकर कहा- सदा कौन जिया है? इससे इन भोले-प्राणियों को भुलावे में क्यों रखूँ । अतः उसने अपने साथी की सलाह मानने से इंकार कर दिया।

प्रश्न-3 शिकारी जन पुन: वन में आए तो पशु और वनस्पतियाँ भड़क उठीं, क्यों?

उत्तर: शिकारी जन जब पुन: वन में आए तो पशु और वनस्पतियाँ भड़क उठीं क्योंकि आपस में बातचीत करने के बाद भी उन्हें वन के विषय में कोई जानकारी प्राप्त नहीं हुई थी। शिकारियों के वन में दोबारा आते ही सारा जंगल

जाग उठा। बहुत से जीव-जंतु, झाड़ी, पेड़ तरह-तरह की बोली बोलकर अपना विरोध व्यक्त कर रहे थे। उन्हें लगता था कि वन नाम की कोई वस्तु नहीं है और शिकारी झूठ बोल रहे हैं।

ख) लगभग 150 शब्दों में उत्तर दें:-

प्रश्न-4 'तत्सत्' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर : इस कहानी में लेखक ने पशुओं एवं वनस्पतियों के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि आज व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत सत्ता के आगे कुछ भी नहीं सोच पाता है।

एक दिन एक वन में दो शिकारी आये। वे एक पेड़ के नीचे बैठ गये। एक शिकारी ने कहा कि यह जंगल तो बड़ा ही भयानक है तथा दूसरे शिकारी ने कहा कि सचमुच यह तो बड़ा घना वन है। इस प्रकार बातचीत करते हुए वे आगे निकल गये। उनके जाने के बाद वन में शीशम के पेड़ ने बड़ के पेड़ से पूछा कि यह वन क्या होता है जिसके बारे में आदमी बातें कर रहे थे ? बड़ ने कहा कि मैंने आज तक वन को नहीं देखा। फिर उन्होंने बबूल के पेड़ से वन के बारे में जानना चाहा। उसको भी वन के बारे में नहीं पता था। इसके बाद पास के अन्य पेड़ पौधे भी बातचीत में शामिल हो गये। फिर बाँस, घास आदि से भी पूछा गया पर किसी को भी वन के बारे में नहीं पता था। इतने में शेर आ गया उसने कहा कि आदमी भरोसे लायक नहीं है। वह झूठ बोल रहा है क्योंकि वन तो मैंने भी नहीं देखा।

एक दिन वे शिकारी फिर उसी वन में आ गये। सभी ने उनसे वन के बारे में जानना चाहा। शिकारी प्रमुख ने बताया कि हम सब जहाँ हैं वहीं तो वन है। किन्तु कोई भी उनकी बात का विश्वास नहीं कर रहा था। तब वह शिकारी एक

पेड़ के शिखर तक चढ़ गया। वहाँ दो नए पत्तों की जोड़ी खुले आसमान की तरफ मुस्कराती हूई देख रही थी। वे दो पत्तियाँ मानो खंड में कुल की सूचना दे रहीं थीं। वह शिकारी नीचे आ गया।बड़ दादा शान्त एवं स्थिर थे। वे बोले, "वह है।" वन के साथियों ने पूछा कि हम कहाँ हैं? तब बड़ ने समझाया कि वह सब कहीं है। उन्होंने फिर पूछा कि हम कहाँ है? बड़ ने उत्तर दिया कि हम नहीं हैं, वह है।

प्रश्न-5 'तत्सत्' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट करें।

उत्तर : यह कहानी उद्देश्य प्रधान है। लेखक ने पशुओं एवं वनस्पतियों के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि आज व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत सत्ता के आगे कुछ भी नहीं सोच पाता है। उसे यह भूल गया है कि उसका अस्तित्व समग्र के एक खंड के रूप में इस प्रकार है जैसे बगीचे में किसी फूल का अस्तित्व होता है। इस कहानी में पेड़-पौधों और पशुओं को अपने-अपने अलग अस्तित्व का बोध तो है किन्तु समग्र अस्तित्व के प्रति वे अनजान हैं। वे वन के अंश के रूप में अपने आप को नहीं देख पाते और अपनी अज्ञानता के कारण अपनी-अपनी ढफली अपना-अपना राग अलापते रहते हैं। जब उन्हें समग्रता का ज्ञान हो जाता है तब वे वन की सत्ता को मानते हैं। इस कहानी से यह भी संदेश मिलता है कि अगर हम एक हैं तो कोई भी हमारा अहित नहीं कर सकता तथा देशहित के आगे हमारा निजी स्वार्थ तुच्छ है।

प्रश्न-6 'तत्सत्' कहानी के नामकरण की सार्थकता पर प्रकाश डालें।

उत्तर : जब पाठक कहानी के शीर्षक को पढ़ता है तो उसके मन में कहानी को पढ़ने की जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है। वह जानना चाहता है कि आखिर 'तत्सत्' से कहानीकार का क्या अभिप्राय है। उसकी यह जिज्ञासा और कौतूहल पूरी कहानी को पढ़कर ही शान्त होती है। वैसे तत्सत्' शब्द तत् +सत् से

मिलकर बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है-वही सत्य है। यह जगत भी सत्य नहीं है जबकि वह ईश्वर जो सभी जगह विद्यमान है, ही सत्य है। लेखक कहना चाहता है कि व्यक्ति का अस्तित्व समग्र के एक खण्ड के रूप में वैसे ही है जैसे बगीचे में फूल का अस्तित्व । इस बात को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने पशुओं और वनस्पतियों का सहारा लिया है। वन के पेड़-पौधों और पशुओं को अपने आप का बोध तो है किन्तु इस से वे अनजान हैं। ज्ञान होने पर ही वे वन की सत्ता को स्वीकार करते हैं। ये समझ जाते हैं कि यह (वन) सत्य है और हम तो केवल उसके अंश मात्र हैं। इस प्रकार तत्सत्' शीर्षक सार्थक होने के साथ-साथ संक्षिप्त,सटीक, आकर्षक एवं कौतूहल भरा भी है।

ग) सप्रसंग व्याख्या करें:-

प्रश्न-7 'जब छोटा था, तब इन्हें देखा था। इन्हें आदमी कहते हैं।इनमें पत्ते नहीं होते, तना ही तना है। देखा वे चलते कैसे हैं?अपने तने की दो शाखाओं पर ही चलते चले जाते हैं।'

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियां जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित 'तत्सत्' कहानी में से ली गयी हैं । ये पंक्तियाँ बड़ के पेड़ ने शीशम के पेड़ से उस वक्त कहीं जब शीशम का पेड़ पूछता है कि जंगल को भयानक कहने वाले कौन थे?

व्याख्या : शीशम के पेड़ के पूछने पर बड़ का पेड़ उससे कहता हैं कि जब मैं छोटा था, तब मैंने इन्हें देखा था। इन्हें आदमी कहा जाता है। ये (आदमी) इस प्रकार के पेड़ होते हैं जिनमें पत्ते नहीं होते, केवल तना ही होता है। वह शीशम के पेड़ को आगे कहता है कि तुमने देखा नहीं कि ये कैसे चलते हैं। ये अपने तने की दो शाखाओं पर ही चलते हैं अर्थात् टाँगों के सहारे चलते हुए आगे बढ़ते हैं।

भावार्थ : बड़ पेड़ के माध्यम से मनुष्य की शारीरिक रचना बतायी गयी है।

विशेष : 1 भाषा सरल एवं स्वाभाविक है।

2.प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न-8 "मालूम होता है, हवा मेरे भीतर के रिक्त में वन-वन-वन ही कहती हुई घूमती रहती है। पर ठहरती नहीं। हर घड़ी सुनता हूँ, वन है, वन है पर मैं उसे जानता नहीं हूँ। क्या वह किसी को दीखा है?"

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियां जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित "तत्सत्" कहानी में से ली गयी हैं। ये पंक्तियाँ बाँस के पेड़ ने वन के बड़ पेड़ से कही हैं।

व्याख्या : यहाँ बाँस का पेड़, बड़ के पेड़ तथा अन्य सभी को वन के बारे में अपना पक्ष बताता हुआ कहता है कि मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि हवा मेरे भीतर की खाली जगह से वन-वन कहती हुई विचरती रहती है पर रुकती नहीं। मैं प्रत्येक पल महसूस करता हूँ कि वन है परन्तु मैं फिर भी उसे जानता नहीं हूँ। वह कहता कि मैं तो स्वयं वन के बारे में जानना चाहता हूँ। यदि आप में से किसी ने उसे देखा है तो मुझे भी उसके बारे में बताओ।

भावार्थ : भाव यह है कि वन के बारे में बाँस के पेड़ को भी कोई ज्ञान नहीं है। उसे हवा के चलने पर सन्-सन् की आवाज़ ही वन-वन करती हुई सुनाई देती है।

विशेष :1. वन के बारे में बाँस के पेड़ की राय द्रष्टव्य है।

2. भाषा सरल, सरस एवं विषय वस्तु के अनुरूप है।

3. लेखक ने यहाँ प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है।

प्रश्न-9. 'ओ सिंह भाई, तुम बड़े पराक्रमी हो। जाने कहाँ-कहाँ छापा मारते हो। एक बात तो बताओ, भाई?

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियां जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित 'तत्सत्' कहानी में से ली गयी हैं। वन के बारे में जानने के इच्छुक बड़ के पेड़ ने ये पंक्तियां पशुराज सिंह से कहीं हैं।

व्याख्या : वन के बारे में किसी को भी कुछ पता नहीं था। बड़ दादा तो खुद वन के बारे में जानने को बहुत उत्सुक थे। तभी वहाँ पशुराज सिंह आ गये। तब बड़ के पेड़ ने शेर से पूछा कि तुम तो बहुत शक्तिशाली हो और शिकार करने के

लिए जगह-जगह छापा मारते हो। तुम्हें तो सब कुछ पता होगा। वह आगे कहता है कि एक बात तो बताओ? कि (क्या तुमने कभी किसी वन को देखा है?)

भावार्थ : भाव यह है कि बड़ का पेड़ शेर से वन के बारे में जानने को उत्सुक है।

विशेष: 1.बड़ के पेड़ की वन के बारे में जिज्ञासा बड़ी तीव्र है।

2.भाषा सरल, सहज एवं स्वाभाविक है।

3.प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

तैयार व प्रस्तुतकर्ता

डॉ.सुनील बहल

एम.ए.(संस्कृत ,हिंदी), एम.एड.,पीएच.डी (हिंदी)

असिस्टेंट डायरेक्टर (एस.सी.ई.आर.टी.)

व स्टेट रिसोर्स पर्सन

(हिंदी और पंजाबी)

==========

=